राष्ट्रीय हल्दी बोर्ड

सन्दर्भ: हाल ही में भारत सरकार ने राष्ट्रीय हल्दी बोर्ड के गठन की घोषणा की, जो देश के भीतर हल्दी और उससे संबंधित उत्पादों की उन्नति को प्राथमिकता देगा।

राष्ट्रीय हल्दी बोर्ड की प्रमुख भूमिकाएं

- **नेतृत्व एवं समन्वय**: यह बोर्ड हल्दी से संबंधित मामलों पर नेतृत्व प्रदान करेगा, मसाला बोर्ड जैसी एजेंसियों के साथ समन्वय बढ़ाएगा और क्षेत्र के विकास को सुविधाजनक बनाएगा।
- **स्वास्थ्य लाभ को बढ़ावा देना**: यह स्वास्थ्य जागरूकता, हल्दी की खपत और इसके अंतरराष्ट्रीय बाजार विस्तार को बढ़ाने के लिए हल्दी कि वैश्विक माँग का लाभ किस प्रकार उठाया जाये इसे भी बढ़ावा देगा।
- **अनुसंधान और विकास**: इसका कार्य हल्दी के नए उत्पादों के लिए अनुसंधान और विकास को बढ़ावा देना और मूल्य वर्धित वस्तुओं के लिए पारंपरिक ज्ञान का उपयोग करना भी है।
- **क्षमता निर्माण**: यह बोर्ड मूल्य संवर्धन बढ़ाने के लिए हल्दी उत्पादकों के लिए क्षमता निर्माण और कौशल विकास पर अपना ध्यान केंद्रित करेगा।
- **गुणवत्ता और खाद्य सुरक्षा**: यह हल्दी उत्पादों के लिए गुणवत्ता और खाद्य सुरक्षा मानकों को भी बढ़ावा देगा।
- **वैश्विक क्षमता**: इस बोर्ड का एक महत्वपूर्ण कार्य यह भी होगा कि, मानवता के लाभ के लिए हल्दी के लाभों की सुरक्षा और उसका पूर्ण दोहन किस प्रकार किया जा सके इस पर विचार करना।

बोर्ड की गतिविधियों के लाभ

- **उत्पादक समृद्धि**: क्षेत्र पर समर्पित ध्यान और मूल्यवर्धन से हल्दी उत्पादकों की आय में सुधार होगा।
- **वैश्विक नेतृत्व**: अनुसंधान, बाजार विकास और मूल्य संवर्धन गतिविधियां उच्च गुणवत्ता वाली हल्दी के अग्रणी निर्यातक के रूप में भारत की स्थिति को बनाए रखेंगी।

बोर्ड की संरचना

- **अध्यक्ष**: केंद्र सरकार द्वारा नियुक्त।
- **सदस्य**: आयुष मंत्रालय, केंद्र सरकार के फार्मास्यूटिकल्स, कृषि और किसान कल्याण विभाग सहित वाणिज्य और उद्योग विभागों के प्रतिनिधि, राज्य सरकार के वरिष्ठ प्रतिनिधि (बारी-बारी से), चुनिंदा राष्ट्रीय/राज्य अनुसंधान संस्थान, हल्दी किसान और निर्यातक सभी इस बोर्ड के सदस्य होंगे।
- **सचिव**: वाणिज्य विभाग द्वारा नियुक्त।

भारत में हल्दी उत्पादन (2022-23)

- भारत वैश्विक स्तर पर हल्दी का सबसे बड़ा उत्पादक, उपभोक्ता और निर्यातक है।
- विश्व का 75% से अधिक हल्दी उत्पादन भारत से होता है।
- इसे 20 से अधिक भारतीय राज्यों में उगाया जाता है, जिनमें महाराष्ट्र, तेलंगाना, कर्नाटक और तमिलनाडु सबसे बड़े उत्पादक राज्य हैं।

हल्दी निर्यात

- विश्व के हल्दी व्यापार में भारत की हिस्सेदारी 62% से अधिक है।
- 2022-23 में, भारत ने 380 से अधिक निर्यातकों के माध्यम से 207.45 मिलियन अमरीकी डालर मूल्य के 1.534 लाख टन हल्दी और उससे बने उत्पादों का निर्यात किया।
- भारत के लिए हल्दी के प्रमुख निर्यात बाज़ार: बांग्लादेश, संयुक्त अरब अमीरात, अमेरिका और मलेशिया हैं।
- बोर्ड की केंद्रित गतिविधियों के साथ, हल्दी निर्यात 2030 तक 1 बिलियन अमेरिकी डॉलर तक पहुंचने की उम्मीद है।

हल्दी के गुण

- यह अदरक परिवार का एक बारहमासी पौधा है।
- इसके प्रकंदों का मसाले, रंग, औषधि और धार्मिक प्रतीक के रूप में उपयोग किया जाता है।
- हल्दी का जीवंत रंग मुख्य रूप से करक्यूमिन के कारण होता है, जो एक चमकीला पीला फेनोलिक यौगिक है।
- करक्यूमिन ने अपने संभावित कैंसर से लड़ने वाले गुणों के कारण सबका ध्यान अपनी ओर आकर्षित किया है, जिससे उच्च करक्यूमिन वाले हल्दी की मांग बढ़ गई है।
- यह 20 और 30 डिग्री सेल्सियस (68 और 86 डिग्री फ़ारेनहाइट) के बीच तापमान वाले क्षेत्रों में पनपता है।
- इसके इष्टतम विकास के लिए पर्याप्त वार्षिक वर्षा की आवश्यकता होती है।
- हल्दी की खेती भारत के मसालों के कुल क्षेत्रफल के लगभग 6% भाग पर की जाती है।
- तेलंगाना भारत में शीर्ष हल्दी उत्पादक राज्य है।
- महाराष्ट्र और तमिलनाडु क्रमशः दूसरे और तीसरे स्थान पर हैं।

भारत-जापान निधि

सन्दर्भ: NIIF ने हाल ही में भारत सरकार और JBIC के साथ एंकर निवेशकों के रूप में 600 मिलियन डॉलर का भारत-जापान निधि (फंड) लॉन्च किया है।

- एनआईआईएफ और जेबीआईसी ने 600 मिलियन डॉलर का भारत-जापान फंड (आईजेएफ) स्थापित करने के लिए एक समझौता किया है।
- भारत सरकार और जेबीआईसी प्राथमिक निवेशक हैं, जिसमें भारत सरकार का योगदान 49% और जेबीआईसी का योगदान 51% है।
- एनआईआईएफ लिमिटेड (एनआईआईएफएल) भारत में जापानी निवेश को प्रोत्साहित करने के लिए जेबीआईसी की सहायक कंपनी जेबीआईसी आईजी के समर्थन से फंड का प्रबंधन करेगी।
- भारत-जापान फंड का मुख्य कार्य पर्यावरणीय स्थिरता और कम कार्बन उत्सर्जन को बढ़ावा देने वाले निवेश पर ध्यान केन्द्रित करना है।
- इसका लक्ष्य भारत में जापानी निवेश बढ़ाने के लिए पसंदीदा भागीदार बनना है।
- यह पहल भारत और जापान के बीच जलवायु और पर्यावरण संबंधी चिंताओं में उनकी साझा प्राथमिकताओं के अनुरूप सहयोग के एक महत्वपूर्ण पहलू का प्रतीक है।
- भारत-जापान फंड की स्थापना दोनों सरकारों के बीच रणनीतिक और आर्थिक साझेदारी में एक उल्लेखनीय प्रगति दर्शाता है।

अंतर्राष्ट्रीय सहयोग के लिए जापान बैंक

- **जेबीआईसी की पृष्ठभूमि:**
  - जेबीआईसी (जापान बैंक फॉर इंटरनेशनल कोऑपरेशन) एक जापानी सार्वजनिक वित्तीय संस्थान और निर्यात क्रेडिट एजेंसी है।
  - इसका गठन 1 अक्टूबर 1999 को जापान एक्सपोर्ट-इम्पोर्ट बैंक (JEXIM) और ओवरसीज इकोनॉमिक कोऑपरेशन फंड (OECF) को मिलाकर संयुक्त रूप से किया गया था।

- **विकास और स्वतंत्रता:**
  - 1 अक्टूबर 2008 को जेबीआईसी जापान फाइनेंस कॉरपोरेशन (जेएफसी) की अंतरराष्ट्रीय शाखा बन गई।
  - इसे 1 अप्रैल, 2012 को जेएफसी से स्वतंत्रता प्राप्त हो गई।
  - JBIC पूरी तरह से जापानी सरकार के स्वामित्व में है और JBIC कानून के तहत संचालित होता है।
- **परिचालन विवरण:**
  - टोक्यो में मुख्यालय वाला जेबीआईसी 21 कार्यालयों के साथ 18 देशों में संचालित होता है।
  - इसका प्राथमिक उद्देश्य विदेशी निवेश और अंतर्राष्ट्रीय व्यापार को सुविधाजनक बनाकर जापान और विदेशी देशों के बीच आर्थिक सहयोग को बढ़ाना है।
  - जेबीआईसी वैश्विक स्तर पर जापानी निर्यात और आयात को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।
- **वैश्विक उपस्थिति:**
  - जेबीआईसी विकसित और विकासशील दोनों देशों में काम करता है।
  - यह अंतरराष्ट्रीय वित्तीय प्रणाली की स्थिरता में योगदान को प्राथमिकता देता है और नियमित वित्तीय संस्थानों के साथ प्रतिस्पर्धा करने से बचता है।
- **आधिकारिक विकास सहायता (ओडीए):**
  - आरम्भ में जेबीआईसी देश की विदेश नीति के अनुरूप जापान की आधिकारिक विकास सहायता (ओडीए) का एक हिस्सा था।
  - वर्तमान में यह सतत विकास को प्राथमिकता देने का दावा करता है और सामाजिक और पर्यावरणीय मुद्दों पर विचार करता है।
  - आधिकारिक विकास सहायता के माध्यम से परियोजना वित्तपोषण के लिए पर्यावरणीय प्रभाव का आकलन आवश्यक है।
  - ओईसीडी के अनुसार, जापान का कुल ओडीए 2022 में बढ़कर 17.5 बिलियन अमेरिकी डॉलर तक पहुंच गया, जिसमें ओडीए सकल राष्ट्रीय आय (जीएनआई) का 0.39% है।

राष्ट्रीय निवेश और अवसंरचना कोष (एनआईआईएफ)

- **स्थापना**: फरवरी 2015
- **मुख्यालय**: मुंबई, भारत
- **सरकारी मंत्रालय**: वित्त मंत्रित्व
- **प्रमुख उद्देश्य**:
  - **धन उगाहना**: विभिन्न उपकरणों का उपयोग करके धन एकत्रित करना।
  - **एंकर निवेशक**: भागीदार निवेशकों को आकर्षित करना।
  - **निवेशक सेवाएं**: फंड निवेशकों की सेवा करना।
  - **परियोजना चयन**: परियोजनाओं और निवेशों को मंजूरी देना।
  - **निजी इक्विटी**: निजी इक्विटी के लिए एएमसी में निवेश करना।
  - **सलाहकार सेवाएं**: बुनियादी ढांचा परियोजना हेतु सलाह प्रदान करना।
- **एनआईआईएफ फंड के प्रकार**:
  - **मास्टर फंड**: यह स्थापित और विनियमित उद्यमों तथा बुनियादी ढांचा परियोजनाओं में निवेश करता है।
  - **निधियों का कोष**: यह अपने अनुभवी प्रबंधकों द्वारा प्रबंधित फंडों में निवेश करता है और एक एंकर निवेशक के रूप में कार्य करता है।
  - **सामरिक निधि**: यह सेबी के तहत वैकल्पिक फंड के रूप में पंजीकृत, इक्विटी निवेश पर ध्यान केंद्रित करता है।

क्वांटम डॉट्स

सन्दर्भ: रसायन विज्ञान में 2023 का नोबेल पुरस्कार मौंगी जी. बावेंडी (Moungi G. Bawendi), लुईस ई. ब्रूस (Louis E. Brus) और एलेक्सी आई. एकिमोव (Alexei I. Ekimov) को उनकी क्वांटम डॉट्स की खोज और संश्लेषण के लिए प्रदान किया गया।

- सामान्यतः तत्वों के गुण आमतौर पर उनमें मौजूद इलेक्ट्रॉनों की संख्या से निर्धारित होते हैं।
- हालाँकि, नैनो-स्केल पर, यह गुण कण आकार से प्रभावित होते हैं, जिससे क्वांटम डॉट्स की अवधारणा सामने आती है।
- क्वांटम डॉट्स ऐसे कण होते हैं जिनका व्यवहार उनके आकार पर निर्भर करता है।
- 1981 में सोवियत संघ में एलेक्सी आई. एकिमोव, कांच में आकार-निर्भर क्वांटम प्रभावों का निरीक्षण करने वाले पहले वैज्ञानिकों में से एक थे।
- उन्होंने पाया कि क्वांटम यांत्रिकी सिद्धांतों के कारण छोटे कण नीली रोशनी को अवशोषित करते हैं।
- अमेरिका में लुई ई. ब्रूस (Louis E. Brus) ने कैडमियम सल्फाइड कणों और सौर ऊर्जा के साथ काम करते हुए स्वतंत्र रूप से आकार-निर्भर गुणों की खोज की।
- उन्होंने देखा कि छोटे कण बड़े कणों की तुलना में प्रकाश को अलग ढंग से अवशोषित करते हैं।
- मौंगी जी. बावेंडी ने विभिन्न तकनीकों और सॉल्वैंट्स का उपयोग करके क्वांटम डॉट्स के निर्माण में और सुधार किया, जिससे विशिष्ट क्वांटम प्रभावों के साथ नैनोक्रिस्टल तैयार हुए।
- बावेंडी की उपयोग में आसान उत्पादन पद्धति ने नैनो टेक्नोलॉजी में क्रांति ला दी, जिससे क्वांटम डॉट्स के अद्वितीय गुणों का पता लगाने के लिए रसायनज्ञों को आकर्षित किया गया।

क्वांटम डॉट्स क्या हैं?

- क्वांटम डॉट्स (क्यूडी) छोटे अर्धचालक कण होते हैं, ये आकार में कुछ नैनोमीटर के होते हैं। इनमे क्वांटम यांत्रिक प्रभावों के कारण ऑप्टिकल और इलेक्ट्रॉनिक गुण भी पाए जाते हैं।
- जब UV प्रकाश द्वारा प्रकाशित किया जाता है, तो क्वांटम डॉट में एक इलेक्ट्रॉन, उच्च ऊर्जा अवस्था में उत्तेजित हो सकता है, जिससे जब यह कम ऊर्जा अवस्था में वापस आता है तो फोटोल्यूमिनेशन प्रक्रिया होती है।
- क्वांटम डॉट्स को अक्सर "कृत्रिम परमाणु" के रूप में जाना जाता है क्योंकि उनकी असतत और बाध्य इलेक्ट्रॉनिक अवस्थाएँ प्राकृतिक परमाणुओं से मिलती जुलती हैं।
- उन्हें कृत्रिम अणु बनाने के लिए एक साथ जोड़ा जा सकता है और विशिष्ट ऑप्टिकल और इलेक्ट्रॉनिक गुणों के साथ इकट्ठा किया जा सकता है।

- क्वांटम डॉट्स आकार के आधार पर उनकी ऑप्टोइलेक्ट्रॉनिक विशेषताओं के साथ, अर्धचालकों और असतत परमाणुओं या अणुओं के बीच का गुण प्रदर्शित करते हैं।
- बड़े क्वांटम डॉट्स नारंगी या लाल रंग जैसे लंबी तरंग दैर्ध्य उत्सर्जित करते हैं, जबकि छोटे डॉट्स छोटी तरंग दैर्ध्य उत्सर्जित करते हैं, जिससे नीले और हरे जैसे रंग उत्पन्न होते हैं।
- क्वांटम डॉट्स को निलंबित किया जा सकता है, जो उन्हें इंकजेट प्रिंटिंग और स्पिन कोटिंग के लिए उपयुक्त बनाता है, यह लागत प्रभावी अर्धचालक निर्माण विधियों की पेशकश भी करता है।

QDs के अनुप्रयोग

- क्वांटम डॉट्स (क्यूडी) अपने उच्च विलुप्ति गुणांक (high extinction coefficient) और तेज़ ऑप्टिकल नॉनलाइनरिटी (nonlinearities) के कारण ऑप्टिकल अनुप्रयोगों के लिए आशाजनक हैं।
- वे एकल-इलेक्ट्रॉन ट्रांजिस्टर की तरह काम करते हैं और कूलम्ब बंद प्रभाव (Coulomb blockade effect) प्रदर्शित करते हैं।
- QDs को क्वांटम सूचना प्रसंस्करण और थर्मोइलेक्ट्रिक्स के लिए जाना जाता है।
- QD आकार को समायोजित करना विभिन्न अनुप्रयोगों के लिए आकर्षक है; बड़े QDs लाल रंग की ओर शिफ्ट होते हैं, छोटे QDs अधिक स्पष्ट क्वांटम गुण प्रदर्शित करते हैं।
- शून्य-आयामी QDs में तीव्र घनत्व होता है, जो उन्हें परिवहन और ऑप्टिकल गुणों के लिए बेहतर बनाता है।
- QD का उपयोग डायोड लेजर, एम्पलीफायर और जैविक सेंसर में किया जाता है।
- वे सोने के नैनोकणों की उपस्थिति से अपने अनुप्रयोगों का विस्तार कर सकते हैं।
- QD का उपयोग ऑप्टिकल एन्कोडिंग, मल्टीप्लेक्सिंग, उच्च-रिज़ॉल्यूशन सेलुलर इमेजिंग और वास्तविक समय में अणुओं और कोशिकाओं की पहचान और उनके ट्रेकिंग करने के लिए किया जाता है।
- उनमें जीवाणुरोधी गुण होते हैं और वे विभिन्न जीवाणुओं को मार सकते हैं।
- जीवविज्ञान में, क्यूडी चमक और स्थिरता के मामले में पारंपरिक कार्बनिक रंगों से बेहतर हैं।
- QDs का उपयोग सेलुलर इमेजिंग, एकल-सेल माइग्रेशन अध्ययन और कई क्षेत्रों में किया जाता है।
- इसके अतिरिक्त ट्यूमर लक्ष्यीकरण और प्रतिदीप्ति स्पेक्ट्रोस्कोपी में उनके संभावित अनुप्रयोग हैं।
- बढ़ी हुई दक्षता और कम लागत की क्षमता के कारण, फोटोवोल्टिक उपकरणों के लिए क्यूडी का उपयोग किया जाता है।
- इनका उपयोग क्वांटम डॉट सौर सेल, हाइब्रिड सौर सेल और नैनोवायर-आधारित सौर सेल में किया जाता है।
- QDs को एलईडी डिजाइनों में शामिल किया जा सकता है, जिससे दक्षता और रंग सटीकता में वृद्धि होगी।
- क्वांटम डॉट डिस्प्ले अधिक सटीक रंग और बेहतर चमक प्रदान करते हैं।
- QDs का उपयोग फोटोडिटेक्टर्स उपकरणों में किया जा सकता है, विशेष रूप से दृश्यमान और अवरक्त-प्रकाश कैमरों और स्पेक्ट्रोस्कोपी में।
- उनके पास रासायनिक रूपांतरण प्रतिक्रियाओं के लिए फोटोकैटलिटिक गुण हैं, जिसमें हाइड्रोजन उत्पादन के लिए पानी का विभाजन भी शामिल है।

स्पीकर की पदच्युति

सन्दर्भ: 4 अक्टूबर को, रिपब्लिकन नेताओं के एक गुट ने स्पीकर केविन मैक्कार्थी को उनके पद से हटा दिया, जिससे संयुक्त राज्य अमेरिका के प्रतिनिधि सभा में अराजकता फैल गई।

स्पीकर

- भारत की सर्वोच्च विधायी संस्था, लोकसभा, दैनिक कार्यों की देखरेख के लिए अपने स्पीकर का चयन करती है।
- स्पीकर का चुनाव नवगठित सदन के पहले कार्यों में से एक है।
- स्पीकर की भूमिका संवैधानिक है तथा संवैधानिक प्रावधानों और लोकसभा के नियमों द्वारा शासित होती है।
- स्पीकर देश के वरीयता सूची में छठे स्थान पर आता है।
- संसदीय कार्यवाही के सुचारू संचालन को सुनिश्चित करने के लिए स्पीकर के पास कई महत्वपूर्ण शक्तियां हैं।
- संविधान के अनुसार स्पीकर का वेतन और भत्ते संसदीय मतदान के अधीन नहीं हैं और भारत की संचित निधि द्वारा वित्त पोषित हैं।
- स्पीकर को संसदीय मामलों पर लोकसभा के महासचिव और वरिष्ठ अधिकारियों से सहायता मिलती है।

निष्कासन

- स्पीकर का कार्यकाल लोकसभा के कार्यकाल के अनुरूप होता है, जो आम तौर पर 5 वर्ष होता है।
- भारतीय संविधान निचले सदन को आवश्यकता पड़ने पर स्पीकर को हटाने का अधिकार देता है। अनुच्छेद 94 और 96 के अनुसार निष्कासन प्रभावी बहुमत (सदन की उपस्थित और मतदान करने वाली कुल संख्या का 50% से अधिक) द्वारा पारित प्रस्ताव के माध्यम से हो सकता है।
- लोक प्रतिनिधित्व अधिनियम, 1951 की धारा 7 और 8 के तहत स्पीकर को लोकसभा सदस्य के रूप में अयोग्य घोषित करके भी हटाया जा सकता है।
- एक स्पीकर के पास इस्तीफा देने का विकल्प होता है।

NEWS IN BETWEEN THE LINES

प्लैटिपस

हाल के डीएनए शोध से पूर्वी ऑस्ट्रेलिया में झाड़ियों की आग के प्रति प्लैटिपस की आश्चर्यजनक संवेदनशीलता का पता चला है।

प्लैटिपस (Platypus) के बारे में:

- प्लैटिपस (ऑर्निथोरहिन्चस एनाटिनस) एक अनोखा और प्रतिष्ठित ऑस्ट्रेलियाई स्तनपायी है।
- यह एक मोनोट्रीम (monotreme) है, जो अंडे देने वाले स्तनधारियों का एक समूह है।
- इसकी विशिष्ट उपस्थिति डकबिल, जालदार पैर और ऊदबिलाव जैसी पूंछ के साथ है।
- यह तैराकी और बिल खोदने दोनों के लिए अच्छी तरह से अनुकूलित है।
- इसके बिल में इलेक्ट्रोरिसेप्टर (Electroreceptors) होते हैं, जिसका उपयोग यह पानी में अपने शिकार की मांसपेशियों और तंत्रिकाओं द्वारा उत्पन्न विद्युत क्षेत्रों का पता लगाने के लिए करता है।

पर्यावास: प्लैटिपस एक अर्ध-जलीय जीव है और आमतौर पर ऑस्ट्रेलिया के पूर्वी तट पर नदियों, झरनों और झीलों जैसे मीठे पानी के आवासों में पाया जाता है।

IUCN स्थिति: प्लैटिपस को लगभग संकटग्रस्त प्रजाति माना जाता है।

लहोनक झील

सिक्किम में दक्षिण लहोनक झील (Lhonak Lake) में 3-4 अक्टूबर, 2023 को विनाशकारी विस्फोट हुआ।

अवस्थिति: दक्षिण लहोनक झील सिक्किम के सुदूर उत्तर-पश्चिमी क्षेत्र में स्थित है।

झील का प्रकार: दक्षिण लहोनक झील एक हिमनद-मोरेन-बांधित झील है, जो लहोनक ग्लेशियर के पिघलने के कारण बनी है।

ऐतिहासिकता: केंद्रीय खुफिया एजेंसी और संयुक्त राज्य वायु सेना द्वारा एकत्र किए गए 1962 के अवर्गीकृत आंकड़ो से 24 नवंबर, 1962 को ग्लेशियर के मुहाने पर एक सुपरग्लेशियल झील के रूप में झील की पहली उपस्थिति का पता चला।

संभावित रूप से खतरनाक झील: दक्षिण लोनाक झील को क्षेत्र की 14 संभावित खतरनाक झीलों में से एक के रूप में वर्गीकृत किया गया है, जो ग्लेशियल लेक आउटबर्स्ट फ्लड (जीएलओएफ) के लिए अतिसंवेदनशील है।

केंद्रीय औषधि मानक नियंत्रण संगठन

केंद्रीय औषधि मानक नियंत्रण संगठन (सीडीएससीओ) ने हाल ही में खतरनाक स्तर के जहरीले रसायनों से दूषित दो भारतीय सिरप की खोज की है।

सीडीएससीओ क्या है?

- सीडीएससीओ केंद्रीय औषधि प्राधिकरण है जो 1940 के औषधि एवं प्रसाधन सामग्री अधिनियम के प्रावधानों को लागू करने के लिए जिम्मेदार है।
- यह भारत सरकार के स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय के तहत संचालित होता है।
- यह भारत में फार्मास्यूटिकल्स और चिकित्सा उपकरणों के लिए राष्ट्रीय नियामक प्राधिकरण (एनआरए) के रूप में कार्य करता है।
- यह भारत में फार्मास्युटिकल दवाओं के विपणन के लिए मंजूरी देने के लिए जिम्मेदार है।
- यह दवाओं के लिए गुणवत्ता मानक निर्धारित और लागू करता है।
- डीसीजीआई (ड्रग्स कंट्रोलर जनरल ऑफ इंडिया) सीडीएससीओ का प्रमुख है और रक्त उत्पादों, आईवी तरल पदार्थ, टीके और सीरा जैसी दवाओं की निर्दिष्ट श्रेणियों के लिए लाइसेंस को मंजूरी देने के लिए जिम्मेदार है।

इचामती नदी

हाल ही में, बंदरगाह, जहाजरानी और जलमार्ग राज्य मंत्री ने पश्चिम बंगाल में राष्ट्रीय जलमार्ग 44 (इचामती नदी) पर ड्रेजिंग कार्य का उद्घाटन किया।

इचामती नदी (Ichamati River) के बारे में:

इचामती नदी एक सीमा-पार नदी है जो भारत और बांग्लादेश से होकर बहती है।

इचामती नदी के तीन भाग हैं:

- यह पद्मा की एक सहायक नदी माथाभांगा नदी से निकलती है और उत्तर 24 परगना में हसनाबाद एवं सतखिरा जिले में देभाटा के पास कालिंदी नदी में मिलती है।
- दूसरा भाग ढाका के पश्चिम में बहता है।
- तीसरा भाग दिनाजपुर का इचामती है।
- यह मुबारकपुर के पास बांग्लादेश में प्रवेश करती है और हबासपुर गांव में भारत में पुनः प्रवेश करती है।

ब्लूवॉकर 3

ब्लूवॉकर 3 क्या है?

ब्लूवॉकर 3 एक प्रोटोटाइप उपग्रह है जिसे एएसटी स्पेसमोबाइल द्वारा नियोजित उपग्रह समूह (satellite constellation) के लिए डिज़ाइन किया गया है।

उद्देश्य: समूह का लक्ष्य वैश्विक स्तर पर मोबाइल और ब्रॉडबैंड सेवाएं प्रदान करना है।

खगोल विज्ञान पर प्रभाव: ब्लूवॉकर 3 के अवलोकन से पता चला कि यह रात के आकाश में सबसे चमकीली वस्तुओं में से एक बनकर खगोल विज्ञान को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित करता है।

चिंताएँ : खगोलविदों और शोधकर्ताओं ने पृथ्वी से निकटता और बड़े आकार के कारण ब्लूवॉकर 3 जैसे उपग्रह तारामंडलों के बारे में चिंताएँ जताई हैं, इससे खगोलीय अवलोकन बाधित होने का खतरा बढ़ जाता है।

वैश्विक अवलोकन: ब्लूवॉकर 3 की चमक और प्रक्षेपवक्र पर डेटा चिली, अमेरिका, मैक्सिको और न्यूजीलैंड सहित दुनिया भर के विभिन्न स्थानों से एकत्र किया गया था।

गर्भाशय प्रत्यारोपण

गर्भाशय प्रत्यारोपण के बारे में:

- गर्भाशय प्रत्यारोपण एक चिकित्सा प्रक्रिया है जिसमें दाता से गर्भाशय (गर्भ) को ऐसे प्राप्तकर्ता में प्रत्यारोपित किया जाता है जिसके पास गर्भाशय नहीं है।
- यह जीवन बचाने वाला प्रत्यारोपण नहीं है लेकिन प्राप्तकर्ता के जीवन की गुणवत्ता में सुधार करता है।
- गर्भाशय प्रत्यारोपण का उद्देश्य मुख्य रूप से उन महिलाओं की सहायता करना है जो अपने गर्भाशय की अनुपस्थिति या शिथिलता के कारण गर्भधारण नहीं कर सकती हैं।
- गर्भाशय प्रत्यारोपण के बाद दुनिया का पहला सफल जीवित जन्म 2014 में स्वीडन में हुआ, जो गर्भाशय कारक बांझपन के इलाज में एक महत्वपूर्ण सफलता है।

समाचारों में स्थान

स्लोवाकिया

राजधानी: ब्रातिस्लावा

अवस्थिति : स्लोवाकिया एक भूमि से घिरा देश है, जो यूरोप के मध्य में स्थित है।

राजनीतिक सीमाएँ:

स्लोवाकिया की सीमाएँ कई देशों के साथ साझा होती हैं: उत्तर में पोलैंड के साथ, पूर्व में यूक्रेन के साथ, दक्षिण में हंगरी के साथ, दक्षिण पश्चिम में ऑस्ट्रिया के साथ, और पश्चिम में चेक गणराज्य के साथ।

भौगोलिक विशेषतायें:

सबसे ऊंची चोटी: गेरलाच पीक स्लोवाकिया की सबसे ऊंची चोटी है।

प्रमुख नदियाँ: यह "वाह नदी और डेन्यूब नदी" (Váh River and the Danube River) सहित महत्वपूर्ण नदियों से घिरा है।

प्रमुख झीलें: कुछ महत्वपूर्ण झीलों में ओरावा झील और वेल्के हिंकोवो प्लेसो (Lake Orava and Velke Hincovo Pleso) शामिल हैं।

POINTS TO PONDER

- **किस संस्था ने 'इंडिया एजिंग रिपोर्ट 2023' नामक रिपोर्ट जारी की?** - यूएनएफपीए
- **कोंगथोंग, जिसने 'सर्वश्रेष्ठ पर्यटन गांव (कांस्य) पुरस्कार 2023' जीता, किस राज्य में स्थित है?** - मेघालय
- **2023 में 'वार्षिक IAEA जनरल कॉन्फ्रेंस' की मेजबानी किस देश ने की?** - ऑस्ट्रिया
- **अरुणाचल प्रदेश के बाद ई-कैबिनेट प्रणाली शुरू करने वाला दूसरा उत्तर-पूर्व राज्य कौन सा है?** -त्रिपुरा
- **टोटो भाषा मुख्यतः कहाँ बोली जाती है?** - पश्चिम बंगाल